बेचारी बत्तख

एक फ्रेंच लोककथा

कैसे दिमाग था उस बेचारी बत्तख का! अपने सिर दर्द को ठीक करने के लिए वो महल में गई पेपरमिंट वाली चाय पीने के लिए. रास्ते में उसे कुछ अन्य जानवर मिले जो भी उसके साथ-साथ चल पड़े. पर महल में पहुँचने से पहले उन्हें एक चीत्कार आवाज़ सुनाई दी. एक भूखा भेड़िया चिल्ला रहा था! फिर सारे जानवर अपनी जान बचाने के लिए पास के घर के दरवाज़े में घुस गए. वो दरवाज़ा महल का दरवाज़ा नहीं बल्कि के टूटी-फूटी झोपड़ी का दरवाज़ा था. पर अन्दर बेचारी बत्तख और उसके साथियों को आश्चर्य का सामना करना पड़ा. एक मनमोहक फ्रेंच लोककथा.
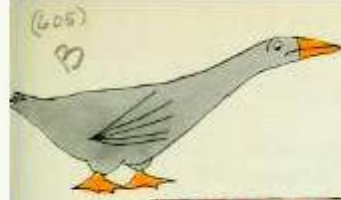
बेचारी बत्तख

एक फ्रेंच लोककथा
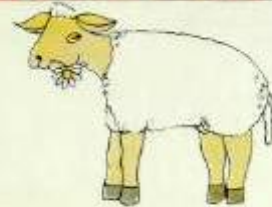
बेचारी बत्तख.

उसके सिर में तेज़ दर्द हो रहा था.

किसी भी इलाज से फायदा नहीं हो रहा था.

“मैं महल में जाऊंगी,” बत्तख ने कहा,
“वहां मैं रसोइए से पेपरमिंट की चाय बनाने को कहूँगी.
उससे मेरा सिर दर्द ज़रूर ठीक हो जाएगा.”

उसके बाद बत्तख ने वही किया.
वो तुरंत महल की ओर चल पड़ी.

बत्तख एक पथरीली पगडंडी पर ऊपर चढ़ी.
“मैं वहां जल्द ही पहुँच जाऊंगी,”
बत्तख ने गीत गाया.
कुछ ही देर में उसकी मुलाक़ात
एक छोटी काली बिल्ली से हुई.
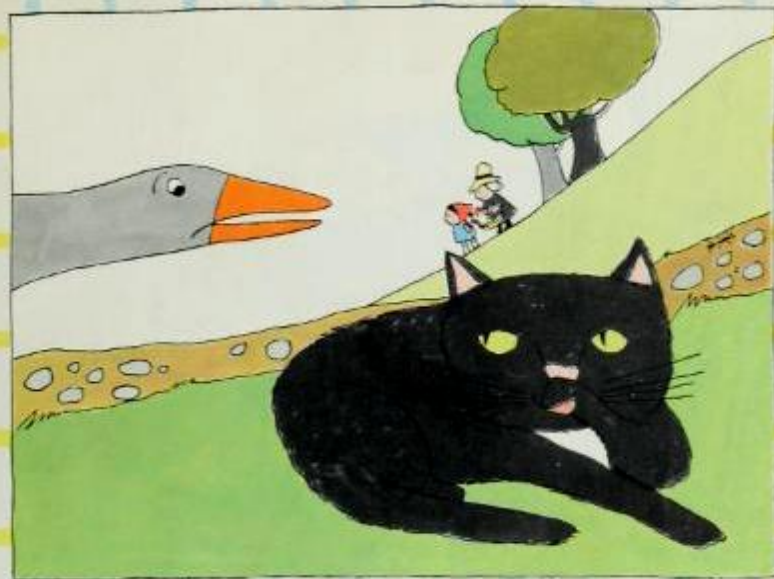
“तुम्हारा दिन शुभ हो,”
छोटी काली बिल्ली ने कहा.
“तुम कहाँ जा रही हो?”
“मैं महल में जा रही हूँ.
वहां मैं रसोइए से पेपरमिंट की चाय बनाने को कहूँगी.
उससे मेरा सिर दर्द ज़रूर ठीक हो जाएगा.” बत्तख ने कहा.
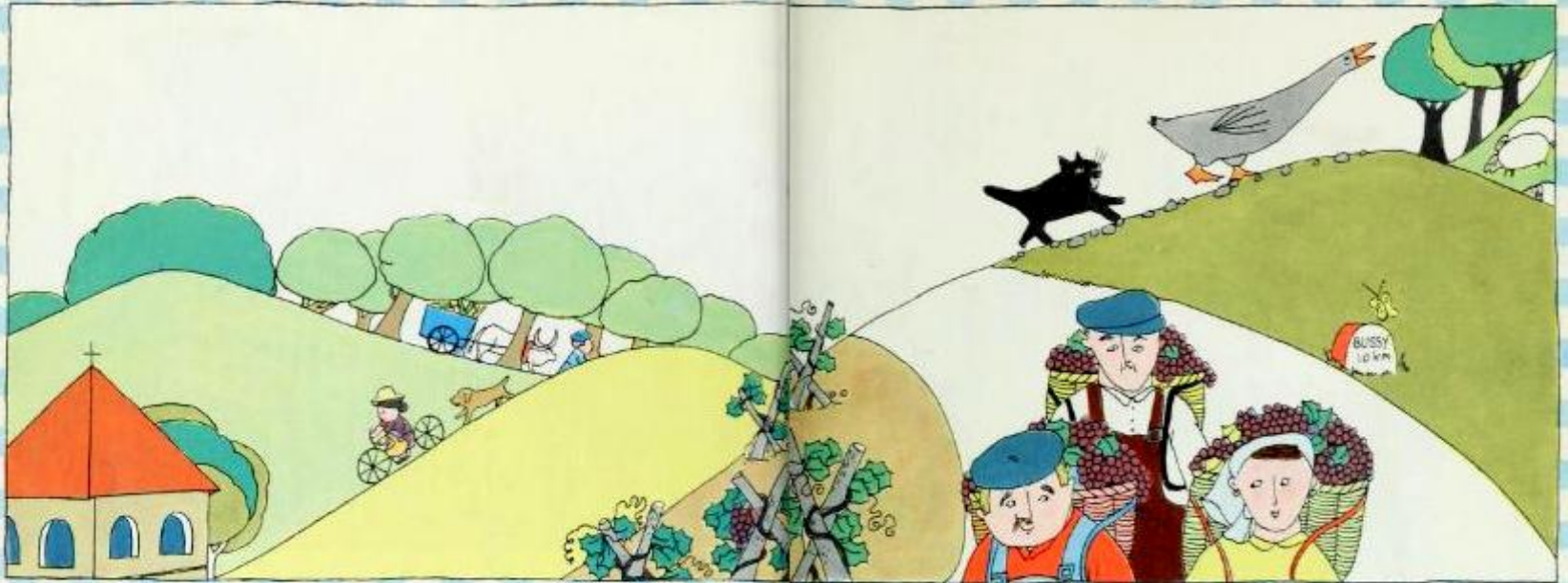
“मुझे भी महल को देखकर कितना अच्छा लगेगा!
मैंने महल कभी नहीं देखा है,”
छोटी काली बिल्ली ने कहा.
“क्या मैं तुम्हारे साथ चल सकती हूँ?”
“ज़रूर,” बत्तख ने जवाब दिया.

उसके बाद बत्तख और छोटी काली बिल्ली
पथरीली पगडंडी पर आगे बढे.
“हम वहां जल्द ही पहुँचेंगे,”
बत्तख और काली बिल्ली ने गीत गाया.
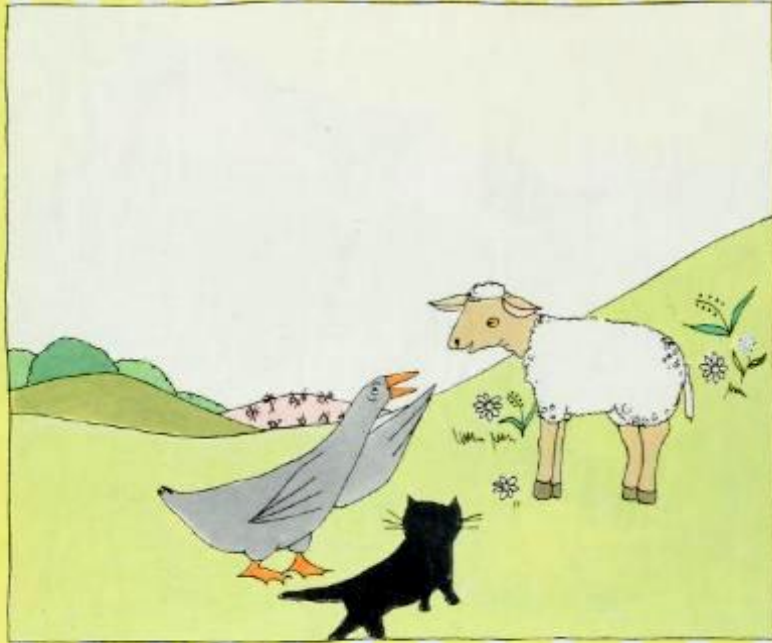
कुछ आगे जाकर चारागाह में
उन्हें एक भेड़ मिली.
“तुम लोग कहाँ जा रहे हो?”
भेड़ ने पूछा.

“मैं महल में जा रही हूँ.
वहां मैं रसोइए से पेपरमिंट की चाय बनाने को कहूँगी.
उससे मेरा सिर दर्द ज़रूर ठीक हो जाएगा.” बत्तख ने कहा.
“मैंने महल कभी नहीं देखा है,”
छोटी काली बिल्ली ने कहा.
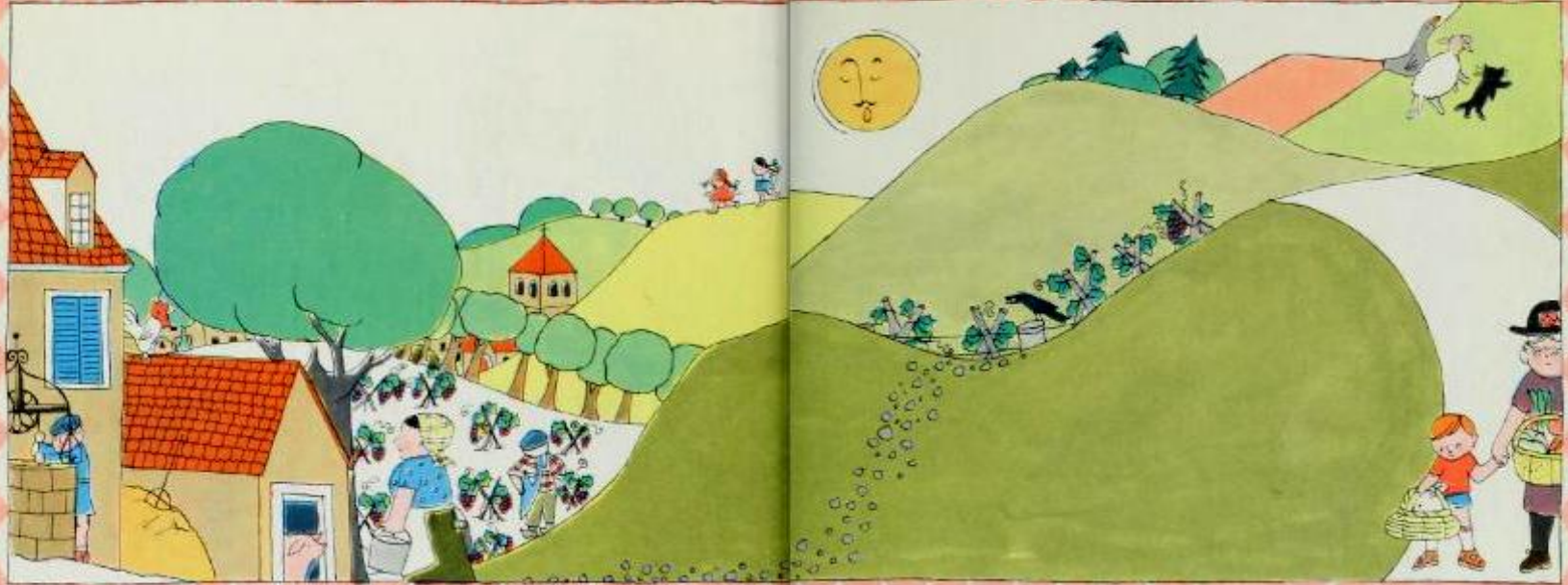
"मुझे महल के नाज़ुक फूलों को कुतरने में
कितना मज़ा आएगा!" भेड़ ने कहा.
"अगर ऐतराज़ न हो तो मैं भी आपके साथ चलूँ."
"ज़रूर," बत्तख ने जवाब दिया.

फिर भेड़ भी उनके साथ-साथ चल दी.
"हम वहां जल्द ही पहुँचेंगे,"
बत्तख, काली बिल्ली और भेड़ ने गीत गाया.

फिर वो पहाड़ी के ऊपर, और ऊपर चढ़े.
सूरज ढलने लगा.
गिरजाघर की घंटी बजने लगी.
पर वो तब भी महल तक नहीं पहुंचे.

पर वो एक गाय के पास ज़रूर पहुंचे.
“शुभ संध्या,” गाय ने कहा.
“आप लोग कहाँ जा रहे हैं?”

“मैं महल में जा रही हूँ.
वहां मैं रसोइए से पेपरमिंट की चाय बनाने को कहूँगी.
उससे मेरा सिर दर्द ज़रूर ठीक हो जाएगा.” बत्तख ने कहा.
“मैंने महल कभी नहीं देखा है,”
छोटी काली बिल्ली ने कहा.

“मैं महल में जाकर वहां के
नाज़ुक फूलों को कुतर-कुतरकर खाऊंगी,”
भेड़ ने कहा.

“अगर मैं भी तुम्हारे साथ चलूँ
तो फिर हम चार हो जाएंगे,” गाय ने कहा.
“तुम भी ज़रूर हमारे साथ चलो!”
बत्तख, छोटी काली बिल्ली और भेड़ ने कहा.

फिर गाय भी उनके साथ चल दी.
“हम वहां जल्द ही पहुँचेंगे,”
पहाड़ी पर ऊपर चढ़ते-चढ़ते चारों ने यह गीत गाया.

कुछ देर में अँधेरा छा गया और चाँद निकल आया.
अँधेरे में वे सभी जानवर खो गए.
वो अब अपने-अपने घरों से दूर एक पहाड़ी पर थे.

तभी "हुआं! हुआं!" की डरावनी आवाजें आनी लगीं.

"यह तो बूढ़े भेड़िये की आवाज़ है," भेड़ ने कहा.
"मैं नहीं चाहती कि वो मुझे खाए!"
"मैं भी नहीं!" बत्तख ने कहा.
"मैं भी नहीं!" छोटी काली बिल्ली ने कहा.
"मैं भी नहीं!" गाय ने कहा.
फिर वे चारों दौड़ने लगे.

"चलो, जल्दी-जल्दी दौड़ो
हम वहां जल्द ही पहुँचेंगे,"
वे दौड़ते रहे और गाते रहे.

दौड़ते-दौड़ते वे एक दरवाज़े पर पहुंचे.
अगर आपको लगा हो कि वो महल का दरवाज़ा था
तो यह आपकी बहुत बड़ी भूल है.

अरे नहीं!
वो दरवाज़ा पुराना और गन्दा था.
घर भी पुराना एक झोपड़ी जैसा था.
वो टूटा-फूटा घर बस गिरने वाला था.

फिर बत्तख, छोटी काली बिल्ली, भेड़ और गाय ने
उस घर की खिड़की में से झाँककर देखा.

घर में एक बूढ़ी औरत आग सेंक रही थी.
बैठे-बैठे बुढ़िया खुद से बातें कर रही थी.

“मैं कितनी दुखी हूँ.
क्योंकि मैं अकेली हूँ.
काश मेरे पास एक मुर्गी या बत्तख होती,
फिर मैं उसके अंडो से नाश्ते में आमलेट बनाती.
काश, मेरे पास कोई भेड़ होती,
फिर मैं उसके ऊन से अपने लिए स्वेटर बुनती.
काश, मेरे पास एक गाय होती,
फिर मैं सोने से पहले गरमागरम दूध पीती.
काश, मेरे पास कोई पालतू कुत्ता या बिल्ली होती,
फिर मैं उससे दोस्ती करती और दिन भर बातें करती.
फिर मुझे कितनी ख़ुशी मिलती!”

तभी “हुआं! हुआं!” बूढ़े भेड़िये के
चिल्लाने की आवाजें आने लगीं.

“चलो हम लोग अन्दर चलते हैं!” बत्तख ने कहा.
फिर बत्तख, काली बिल्ली और भेड़ चारों
दौड़कर उस औरत के घर में घुसे.
उन्हें देखकर बुढ़िया को बेहद आश्चर्य हुआ!

फिर अचानक बत्तख के
सिर का दर्द गायब हो गया.
बत्तख ने एक अंडा दिया.
गाय ने दूध दिया.

बूढ़ी औरत ने भेड़ की पीठ सहलाई.
उसने छोटी काली बिल्ली को अपनी गोद में रखा
और फिर बुढ़िया ने गाना गाया,
“मेरे सभी दोस्त आए
वे चांदनी रात में आए!”

बुढ़िया गाना गाती रही.
फिर सब लोग चैन से सो गए.
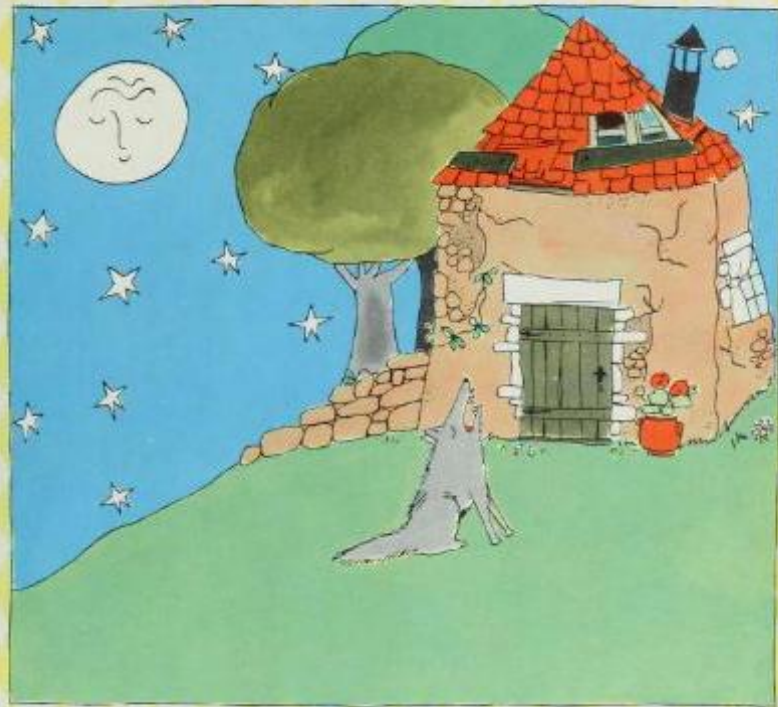
वो भेड़िया चिल्लाता रहा, गुर्राता रहा.
पर घर का दरवाज़ा कसकर बंद था.

उसके बाद से बत्तख को कभी सिर दर्द नहीं हुआ.
इसलिए वो कभी महल में नहीं गई.
न ही छोटी काली बिल्ली
न भेड़ न गाय.

वे सभी उस टूटी-फूटी झोपड़ी में
आराम से रहने लगे.
वो झोपड़ी पहाड़ी के ऊपर
एक पथरीले रास्ते पर स्थित थी.

अंत